॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥चतुर्थः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्रायं राजन्यम्। मरुद्भ्यो वैश्यम्। तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय पुꣳश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय मागधम्॥१॥

गीतायं सूतम्। नृत्तायं शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्मायं रेभम्। नरिष्ठायै भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दायं स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय तक्षाणम्॥२॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपायं मणिकारम्। शुभे वपम्। शरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे ज्याकारम्। दिष्टायं रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय श्वनितम्॥३॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्।

आर्त्यै परिविविदानम्। अराध्यै दिधिषूपतिम्। पवित्राय भिषजम्। प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्यै पेशस्कारीम्। बलायोपदाम्। वर्णायानूरुधम्॥४॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय दुर्मदम्। प्रयुद्भ्य उन्मत्तम्। गन्धर्वाप्सराभ्यो व्रात्यम्। सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवेभ्यः कितवम्। इर्यताया अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानेभ्यः कण्टककारम्॥५॥

उथ्सादेभ्यः कुब्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वाभ्यः स्रामम्। स्वप्नायान्धम्। अधर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्। प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्निनम्। उपशिक्षाया अभिप्रश्निनम्। मर्यादायै प्रश्नविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विवित्त्यै क्षत्तारम्। औपद्रष्टाय सङ्ग्रहीतारम्। बलायानुचरम्। भूम्ने परिष्कन्दम्। प्रियाय प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेधाय वासः पल्पूलीम्। प्रकामाय रजयित्रीम्॥७॥

भायै दार्वाहारम्। प्रभाया आग्नेन्धम्। नाकस्य

पृ॒ष्ठाया॑भिषे॒क्तारम्॑। ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टपा॑य पात्रनिर्णे॒गम्। दे॒व॒लो॒काय॑ पेशि॒तारम्॑। म॒नु॒ष्य॒लो॒काय॑ प्रकरि॒तारम्॑। सर्वे॑भ्यो लो॒केभ्य॑ उपसे॒क्तारम्॑। अव॑त्यै व॒धायो॑पमन्थि॒तारम्॑। सु॒व॒र्गाय॑ लो॒काय॑ भाग॒दुघम्॑। वर्षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य परिवे॒ष्टारम्॑॥८॥

अर्मे॑भ्यो हस्ति॒पम्। ज॒वाया॑श्व॒पम्। पुष्ट्यै॑ गोपा॒लम्। तेज॑सेऽजपा॒लम्। वी॒र्या॑याविपा॒लम्। इरा॑यै की॒नाशम्॑। की॒लाला॑य सुराका॒रम्। भ॒द्राय॑ गृह॒पम्। श्रेय॑से वित्त॒धम्। अध्य॑क्षायानुक्ष॒त्तारम्॑॥९॥

म॒न्यवे॑ऽयस्ता॒पम्। क्रोधा॑य निस॒रम्। शोका॑याभिस॒रम्। उ॒त्कू॒ल॒वि॒कूलाभ्या॑न्त्रि॒स्थिनम्॑। योगा॑य यो॒क्तारम्॑। क्षेमा॑य विमो॒क्तारम्॑। वपु॑षे मानस्कृ॒तम्। शीला॑याञ्जनीका॒रम्। निर्ऋ॑त्यै कोशका॒रीम्। य॒माया॒सूम्॥१०॥

य॒म्यै॑ यम॒सूम्। अथ॑र्व॒भ्योऽव॑तोकाम्। स॒व॒त्स॒राय॑ पर्या॒रिणी॑म्। प॒रि॒व॒त्स॒रायावि॑जाताम्। इ॒दा॒व॒त्स॒राया॑प॒स्कद्वरीम् इ॒द्व॒त्स॒राया॒तीत्व॑वरीम्। व॒त्स॒राय॒ विज॑र्जराम्। स॒र्व॒न्त्स॒राय॒ पलि॑क्नीम्। वना॑य वन॒पम्। अ॒न्यतो॑रण्याय दाव॒पम्॥११॥

सरो॑भ्यो धैव॒रम्। वेश॑न्ताभ्यो॒ दाशम्॑। उ॒प॒स्थाव॑रीभ्यो॒ बैन्दम्॑। न॒ड्व॒लाभ्यः॑ शौष्क॒लम्। पा॒र्याय कैव॒र्तम्। अ॒वा॒र्याय मार्गा॒रम्। ती॒र्थेभ्य॑ आ॒न्दम्। विष॑मेभ्यो मैना॒लम्। स्वने॑भ्यः॒ पर्ण॑कम्। गुहा॑भ्यः॒ किरा॑तम्। सानु॑भ्यो॒ जम्भ॑कम्। पर्व॑तेभ्यः॒ किम्पू॑रुषम्॥१२॥

प्र॒ति॒श्रुत्का॑या ऋतु॒लम्। घोषा॑य भ॒षम्। अन्ता॑य बहुवा॒दिनम्॑। अ॒न॒न्ताय॒ मूकम्॑। मह॑से वीणावा॒दम्। क्रोशा॑य तूणव॒ध्मम्। आ॒क्र॒न्दाय॑ दुन्दुभ्याघा॒तम्। अ॒व॒र॒स्प॒राय॑ शङ्ख॒ध्मम्। ऋ॒भुभ्यो॑जिनसन्धा॒यम्। सा॒ध्येभ्य॑श्चर्म॒म्णम्॥१३॥

बी॒भ॒त्सायै॑ पौल्क॒सम्। भूत्यै॑ जागर॒णम्। अभू॑त्यै स्वप॒नम्। तु॒लायै॑ वाणि॒जम्। वर्णा॑य हिरण्यका॒रम्। विश्वे॑भ्यो दे॒वेभ्यः॑ सिध्म॒लम्। प॒श्चा॒द्घो॒षाय॑ ग्ला॒वम्। ऋत्यै॑ जनवा॒दिनम्॑। व्यृ॑द्ध्या अपग॒ल्भम्। स॒ꣳश॒राय॑ प्र॒च्छिदम्॑॥१४॥

हसा॑य पुꣳश्च॒लूमा ल॑भते। वी॒णा॒वा॒दङ्गृ॑णकङ्गी॒ताय॑। याद॑से शाबु॒ल्याम्। न॒र्माय॑ भद्रव॒तीम्। तू॒ण॒व॒ध्मं ग्रा॑म॒ण्य॑ पाणिसङ्घा॒तनृ॒त्ताय॑। मोदा॑यानु॒क्रोश॑कम्। आ॒न॒न्दाय॑ तल॒वम्॥१५॥

अ॒क्ष॒रा॒जाय॑ कित॒वम्। कृ॒ताय॑ सभा॒विनम्॑। त्रेता॑या आदिनवद॒र्शम्। द्वा॒प॒राय॑ बहि॒ः सदम्॑। कल॑ये सभास्था॒णुम्। दु॒ष्कृ॒ताय॑ च॒रका॑चार्यम्। अध्व॑ने ब्रह्मचा॒रिणम्॑। पि॒शा॒चेभ्यः॑ सैल॒गम्। पि॒पा॒सायै॑ गोव्य॒च्छम्। निर्ऋ॑त्यै गोघा॒तम्। क्षु॒धे गो॑विक॒र्तम्। क्षु॒त्तृ॒ष्णाभ्या॒न्तम्। यो गां वि॒कृन्त॑न्तं मा॒ꣳसं भिक्ष॑माण उप॒तिष्ठ॑ते॥१६॥

भूम्यै॑ पीठस॒र्पिण॒मा ल॑भते। अ॒ग्नये॑ऽꣳस॒लम्। वा॒यवे॑ चाण्डा॒लम्। अ॒न्तरि॑क्षाय वꣳशन॒र्तिनम्॑। दि॒वे ख॑ल॒तिम्। सूर्या॑य हर्य॒क्षम्। च॒न्द्रम॑से मिर्मि॒रम्। नक्ष॑त्रेभ्यः कि॒लासम्॑। अह्ने॑ शु॒क्लं पि॑ङ्ग॒लम्। रात्रि॑यै कृ॒ष्णं पि॑ङ्गा॒क्षम्॥१७॥

वा॒चे पुरु॑ष॒मा ल॑भते। प्रा॒णम॑पा॒नव्यां॒नमु॑दा॒नꣳ स॑मा॒नन्तान् वा॒यवे॑। सूर्या॑य॒ चक्षु॒रा ल॑भते। मन॑श्च॒न्द्रम॑से। दि॒ग्भ्यः श्रोत्रम्॑। प्र॒जाप॑तये॒ पुरु॑षम्॥१८॥

अथै॒तानरू॑पेभ्य॒ आल॑भते। अति॑ह्रस्व॒मति॑दीर्घम्। अति॑कृ॑श॒मत्य॑ꣳसलम्। अति॑शुक्ल॒मति॑कृष्णम्। अति॑श्लक्ष्ण॒-मति॑लोमशम्। अति॑किरिट॒मति॑दन्तुरम्। अति॑मिर्मिर॒मति॑मेमिष आ॒शायै॑ जा॒मिम्। प्र॒ती॒क्षायै॑ कुमा॒रीम्॥१९॥

ब्रह्मणे गीताय श्रमाय सन्धये नदीभ्य उथ्सादेभ्य ऋत्यै भाया अर्मेभ्यो मन्यवे यम्यै दशदश सरोभ्यो द्वादश प्रतिश्रुत्काये बीभथ्साये दशदश हसाय सप्ताक्षराजाय त्रयोदश भूम्यै दश वाचे षडथ नवैकान्नविꣳशतिः॥१९॥

ब्रह्मणे यम्यै नवदश॥१९॥

ब्रह्मणे कुमारीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

This PDF was downloaded from http://stotrasamhita.github.io.
GitHub: http://stotrasamhita.github.io | http://github.com/stotrasamhita
Credits: http://stotrasamhita.github.io/about/